पंचम अध्याय

महीप सिंह की कहानियाँ में नारी की भूमिकाएँ

* **प्रस्तावना**

5.1 महीप सिंह की कहानियाँ में पति-पत्नी एवं तलाक़शुदा जीवन में नारी की भूमिका

5.2 महीप सिंह की कहानियाँ में मित्र एवं कामकाजी सहकर्मी संबंध में नारी की भूमिका

5.3 महीप सिंह की कहानियाँ में विवाहेतर संबंध में नारी की भूमिका

5.4 महीप सिंह की कहानियाँ में विवाह के पहले प्रेम संबंध में नारी की भूमिका

5.5 महीप सिंह की कहानियाँ में जटिल पात्रों में नारी की भूमिका

* **निष्कर्ष**

* **संदर्भ ग्रंथ-सूची**

पंचम अध्याय

महीप सिंह की कहानियाँ में नारी की भूमिकाएँ

*** प्रस्तावना**

"आज के युग में मानवीय सम्बन्ध बहुत बुरी तरह से विघटित हो रहे है, पर इन सारे टूटते संम्बधों में मुझे अन्दर ही अन्दर एक नए सम्बन्ध की तलाश रहती है।"**1**

महीप सिंह

मानव-समाज की संरचना संम्बधों के ताने-बाने से ही बनती हुई है। बरसों से एक ही परम्परा के रूप से बने हुए मानवीय सम्बन्ध हमेशा एक जैसे ही नहीं रहे है। संम्बधों का रूप भी बदलता रहा है। संम्बधों के अन्दर जीते हुए मनुष्य न जाने कितनी तरह की भावानुभूतियों को झेलता आ रहा है।

कहानीकार अपने युगीन परिवेश के प्रति प्रतिबद्ध रहता है, यह उस प्रतिबद्धता के प्रति लेखक की ईमानदारी मानी जाती है कि उसके कथ्य का मूल विषय संबंध है। साहित्य लेखक की अभिव्यक्ति होती है। मनुष्य समाज का निर्माण करता है तथा उसे प्रभावित करता है और फिर समाज ही मनुष्य का निर्माण करता है। डॉ.हेतु भारद्वाज के अनुसार "देशकाल मानव संस्कृति के निर्धारक तत्व हैं और संस्कृति के साथ मनुष्य का युक्तिसंगत रिश्ता होता है, तथा व्यक्तिगत रूप के मानव अपने चारों ओर के संसार, समाज, क्रियाशीलता तथा संगठनों से अपना संबंध स्थापित कर उनका अंग बन जाता है।"**2**

यह बात स्वाभाविक है कि जिस साहित्यकार को समाज में व्याप्त विसंगतियों पीड़ित करती है, वहीं साहित्यकार समाज के खोखलेपन को

उभारने में सफल रहता है। महीप सिंह समाज में नारी की समस्याओं, उसकी वेदना, दर्द, उसकी भूमिकाएँ और विसंगतताओं ने प्रभावित किया है। महीप सिंह 'इक्यावन कहानियाँ' की भूमिका के पहले पन्ने में कहते हैं कि - **"**स्वभाव सामाजिक है, परन्तु इस सामाजिक स्वभाव के कारण बने विविध संबंधों का खोखलापन भी मेरे सामने बहुत साफ है। गर्मजोशी से मिलते हुए मोहक मुस्कुराहटों के पीछे छिपी तुच्छता और कुटिलता भी मुझे नजर आती रहती है। परन्तु कई बार संबंधों के झूठ को जानकर भी संबंधों से कटकर जीना मुझे बहुत दूभर लगता है।**"3** महीप सिंह के इस चिंतन से निर्मित कहानियाँ वस्तुतः उनकी खुद के भोगी हुई परिस्थितियों की उपज है। **"**साहित्य में अधिकतर व्यक्ति की निजी जीवनानुभवों का प्रतिफलन रहता है। जिनकी आधार भूमि होती है जीवन की संघर्ष स्थली।**"4**

महीप सिंह ने अपने कहानियों के माध्यम के माध्यम से अपने समय के मानवीय संम्बधों को परखने, उनमें आते बदलावों को जानने और उन्हें झेलते मनुष्य की मन:स्थिति को व्यक्त करने का कार्य किया है। इन परिवर्तनों के पीछे सक्रिय कारक भी उनकी रचनाओं में झांकते दिखाई देते है। महीप सिंह की कहानियों में नारी पात्र सामाजिक को अधिक से अधिक तरजीह देते है। इनकी कहानियाँ अधिकतर मध्यमवर्गीय परिवारों से आए पात्रों की कहानियाँ है। उनके नारी पात्र शिक्षित व आत्मनिर्भर है। नारी पात्रों अधिकतर प्रेम-प्रसंगों में धोखा भी खाती है। लेकिन नारी पात्र परिस्थितियों से जूझकर संघर्षशील जीवन बिताने में ही जीवन की सफलता मानती है।

नारी के हर रुप को चित्रित करना मानो महीप सिंह का उद्देश्य है। कुछ नारी पात्रों में 'स्व' की भावना इस क़दर भरी है कि उन्हें लगता है कि रिश्ते नाम की कोई चीज नहीं होती। ये बनते-बिगडते रहते है। उन्हें

लगता है स्व की तृप्ति के लिए, उसी को ज़िन्दा रखने के लिए संसार में सभी काम किए जाते है।

यह अध्याय में हम चतुर्थ अध्याय के आधार पर से महीप सिंह की जो हमने चुनी हुई नारी पात्रों की कहानियों लि है, उसमें से हम इस अध्याय में यही कहानियों में से नारी की अलग-अलग भूमिकाएँ के बारे में जानेगे।

5.1 महीप सिंह की कहानियाँ में पति-पत्नी एवं तलाक़शुदा जीवन में नारी की भूमिका

हमारे भारतीय समाज में कहीं संबंध है, सभी अपनी-अपनी जगह पर अलग-अलग महत्व देता है, मगर स्त्री-पुरूष यानी पति-पत्नी का एक विशिष्ट महत्व। इस जगत की रचना पति-पत्नी के सहयोग से ही बनी गई है। स्त्री -पुरूष के आकर्षण को एक सत्य मानते हुए महादेवी वर्मा कहते है कि - **"**समाज वृक्ष के सघन मूल का पहला अंकुर स्त्री-पुरूष और उसकी संतान में पनपा, इसे निर्मूल कर देना सम्भव नहीं हो सकेगा।**"5**

समाज का आधार परिवार होता है, और परिवार का आधार है पति-पत्नी के संबंधों पर निर्भर करता है। जया आदवानी का मानना है कि - **"**पति-पत्नी के संबंधों में सभी संबंधों का मूल स्त्रोत है। यही से सभी संबंधों की शाखा - उपशाखाएँ, धाराएँ-उपधाराएँ निसृत होकर परिवार, समाज, राष्ट्र और संसार की महोदधि का निर्माण करते हैं। दाम्पत्य ही वह मूल बिन्दु है जहाँ पर संबंध की रेखाएँ आकर कही न कही मिलती है।**"6** पति-पत्नी के बीच परस्पर भावुकता व आत्मत्यांग का स्थान बौद्धिकता और आत्म-सजगता ने ले लिया है, जिससे दाम्पत्य जीवन में अलगाव और तनाव जैसी परिस्थितियाँ पैदा होती है। पति-पत्नी के अहम की टकराहट से कलह की फूटती चिंगारियों से अबोध संतान ही भागती

है। तलाक तक की स्थिति पहुंचने पर संतान की परवरिश में बड़ी समस्या आती है।

जब पति-पत्नी के बीच विधिवत् सम्बन्ध विच्छेद हो चुका होता है, तब उनके बीच क्या बाकी रह जाता है ? कुछ अवश्य रह जाता है। महीप सिंह की कहानी 'घिराव' में पत्नी सुम्मी अपने अतीत से उलझी हुई है। सुम्मी तीन साल पहले ही अपने पति अमर से अलग हो चुकी है, तलाक लेकर भी अभी तक वह पूरी तरह अलग नहीं हो पाई है। उसे अलग रहकर भी हर समय उसके मिल जाने का डर लगा रहता है। वह यह भी जानती है कि अचानक मिल जाने से अमर उसके साथ अच्छा व्यवहार करेगा फिर भी वह आशंका के घेरे में रहती है। सुम्मी का मित्र पूछता है कि - **"**यह बताओं कि अब अमर का अस्तित्व तुम्हारे लिए है कितना ? तो वह कहती है कि - "तर्क से बुद्धि से कहूँ तो मेरे लिए उसका अस्तित्व बस इतना है कि वह भी उन सैंकड़ों आदमियों में से एक है जो दिल्ली में रहता है, और में जिन्हें जानती हूँ।**"7** पति-पत्नी का तलाक होने के बाद भी सुम्मी अपने पति को नहीं भूल पाती है। पति-पत्नी के दोनों के बीच अभी भी कुछ शेष बचा है। यहाँ पर सुम्मी की मानसिकता पति-पत्नी के रिश्तों से उभरकर नहीं आई है।

'धूप की उंगलियों के निशान' कहानी में तलाक़शुदा पति-पत्नी के सात वर्ष बाद अचानक मिल जाने पर पर उभरता है। नीता सहारनपुर से दिल्ली आए अपने पूर्व पति को बिना झिझक अपने फ्लैट में रात बिताने के लिए कह देती है और वादा भी करती है कि - **"**पिछली कोई बात नहीं कुरेदूंगी।**"8** दोपहर में बस में एक साथ बैठकर फ्लैट में आने से लेकर अगली सुबह फिर बस स्टॉप पर जाने तक के समय में उनके बीच होने वाली बातचीत और उठने वाली अनकही अनुभूति -तरंगें जटिल रूप से चित्रण करती है। नीता उसकी पूरी जानकारी रखती है, उसके अच्छे

स्वास्थ्य को लेकर संतोष भी व्यक्त करती है, उसके आराम का पूरा ध्यान रखती है, उससे कोई संबंध नहीं है और वह वैसी ही रहना चाहती है। इसलिए सुबह वापस जाते समय- **"**उसने धन्यवाद कहना चाहा परन्तु उसे यह पता नहीं लगा पा रहा था कि नीता की आंखों का रंग कैसा है। उसे सिर्फ उसके होठ दिखाई दे रहे थे जो जुड़े हुए थे जिनमें कोई हरकत नहीं थी जिनसे कुछ भी फूटता नहीं दिखाई दे रहा था।**"9** यहाँ पर भी एक नारी जिससे तलाक लिया है उसकी ही देखभाल कर रही है, वह अपना पति-पत्नी वाला संबंध नहीं भूला पाती है। यहाँ पर वह पत्नी वाली भूमिका निभाती हुई नजर आती है।

दांपत्य जीवन के पति-पत्नी के रिश्तों में तनाव का बुरा असर संतानों को झेलना पड़ता है। पति-पत्नी के अलग हो जाने से ज्यादातर संतान की ज़िम्मेदारी ज्यादातर नारी पर आ जाती है। ऐसे वक्त नारी के लिए आर्थिक प्रश्न बड़ा बन जाता है। नारी को पारिवारिक ज़िम्मेदारियों, बच्चों का भविष्य, अपने स्वाभिमान की रक्षा आदि की चिन्ता सोचने को मजबूर कर देती है। 'काला बाप गोरा बाप' कहानी में नारी की दयनीय स्थिति है। यूनुस अपने यौन तृप्ती के लिए वह अपनी पत्नी जमीला और दो छोटी बच्चीयों को छोड़कर बेसहारा बनाकर सकीना के साथ दूसरी शादी कर लेता है। जमीला का मानना है कि - **"**हिंदुस्तान में लोग लड़कियों को मुसीबत समझते है। खास तौर से बे-बाप की लड़कियों तो फूटी आंखों नहीं सुहाती।**"10** जब दस साल बाद यूनुस यूनुस स्वास्थ्य और धन सब कुछ खोकर असहाय हो गया है तब जमीला के पास आने की इच्छा रखता है। यहाँ पर पूरी बात पुरूष स्वार्थ दिखाई देता है। जमिला जब अपनी बच्ची को दूर के रिश्तेदार बताती है लेकिन छोटी बच्ची जब 'देखो न ये बुड्ढा' ..... कहकर उसका अपमान करती है तो जमीला जैसे फट पडती है - **"**अपने बाप को ऐसा कहते शर्म नहीं

आती ?"**11** संम्बधों का समाप्त हो जाना वास्तव में कभी हो ही नहीं पाता।

'उलझन' कहानी में दाम्पत्य जीवन में मधुरता उभर कर आई है। कहानी में प्रोफेसर सभी कामों के लिए पत्नी पर निर्भर रहता है। पत्नी अपना सब कुछ देकर घर परिवार चलाती है। यहाँ पर जो नारी पत्नी के रूप में हैं वह मानती है कि पति-पत्नी समान अधिकार पाने के लिए स्वतंत्र और प्रयत्नशील है। फिर भी हमारा भारत देश पुरुष प्रधान समाज में ज्यादातर नारी को अपने पति के अनुशासन में रहने को मजबूर होना पड़ता है। पत्नी अपनी स्थिति घर के नौकर समान लगती है "आप पुरुष लोग तो मेहनत करते है और ये स्त्रियों घर में बेकार बैठी रोटियाँ तोड़ती है..... हम चौबीस घंटे में नौकर हैं और ऐसे नौकर कि जिनके काम को काम नहीं समझा जाता।"**12** सामान्य रूप से पत्नी अपने निजी मामलों से पति को अवगत नहीं कराती है। हम अगली कहानी में देखे तो 'पत्नियाँ' में प्रोफेसर युवा माहौल में रहने के कारण अपने आप युवा महसूस करते है कि उसकी पत्नी का रंग "कुछ इस तरह उसका रंग बदरंग हो गया है कि उस तरफ झाँकने की उन्हें जरूरत ही महसूस नहीं होती।"**13** पत्नी को देखते है तो वह घरेलू काम में बच्चों की देखरेख में वह अपने लिए समय निकाल नहीं पाती है। पत्नी की उम्र बढ़ने के कारण पति न तो उन्हें किसी पार्टी में, नहीं वह दोस्तों से पत्नी के बारे में खुलकर बात करता है। यहाँ पर पत्नी बहोत विवश बन जाती है।

महीप सिंह की कई कहानी है, जिसमें पुरुष को मात्र बेज़िम्मेदार और दुर्बलताओं से ग्रस्त है, जबकि नारी पात्र विपरीत परिस्थितियों के बीच अलग रास्ता चुनती नजर आती है। उदाहरण के रूप से देखा जाए तो 'काला बाप गोरा बाप', की जमीला 'ब्लाटिंग पेपर' की प्रीति 'घिरे हुए क्षण' की मोहिनी जैसी कई नारी अपने पति या पुरुष पात्र से ज्यादा

सबल बनती दिखाई दी गई है। जो सही अर्थ में नारी को पुरुष के समक्ष स्थान मिलता है। इन्हीं कहानी में जो नारी पात्रों के चित्रण से नारी को बेचारी समझने वाले समाज की सोच को बदला जा सकता है।

आगे देखा जाऐं तो 'लोग' कहानी में नारी यानी पत्नी अपने 'स्व' के कारण उनके दाम्पत्य जीवन में क्लेश पैदा होता है। पत्नी नौकरी करती है, वह अपने पति को इतना महत्व नहीं देती है। पति कहता है कि - **"**नीला से मेरी बहुत अच्छी तरह निभ सकती है..... यदि वह बस थोड़ा-सा मेरी भावनाओं की क़दर कर लिया करे। पता नहीं क्या बात है वह बात-बात में मुझे खिझाती है, टीज करती है। अपनी बात वह ज़बरदस्ती मनवा लेती है।**"14** यहाँ पर नारी अपनी स्व की भावना दिखाती है। वह असहाय या बेचारी नहीं है। नारी अपने पति के बिना भी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है।

आज के समय में नारी भी पुरुष के समान ही अपना अधिकार की चाहत रखती है। आजकल समाज में नारी की नौकरी करना आम बात बनती जा रही है। मगर नारी धर से बाहर कोई और पुरुषों के बीच रहने लगे वहाँ अपना पति संकाशील बनता जाता है। महीप सिंह की 'घिरे हुए क्षण' कहानी में पत्नी रेडियो नाटक में काम करती है तो उसे आने में देर हो जाती है। यही बात उसके पति को अच्छी नहीं लगती है। पति सोचता है कि - **"**एक बड़ा रोमांटिक ख्याल आता है वह मोहिनी को कही भगा ले जाए। वह उसकी पत्नी है। वह एक पराई औरत है कितने ही लोगों से घिरी हुई एक पराई औरत।**"15** यहाँ पर पति-पत्नी दोनों अपने अपने ढंग की अलग जीवन जीना चाहते है। आज की नारी अपने प्रत्ये संकाशील नजर को बर्दाश्त नहीं कर पाती है। दोनों के बीच ऐसी स्थिति हो गई की दोनों अलग होने का सोचने लगते है। नारी की नौकरी करने के कारण दाम्पत्य जीवन में बिखराव आ सकता है क्या ? यही हमारा समाज है।

'गंघ' कहानी में नारी स्वतंत्र विचारों की और आत्मनिर्भर है। जब उसके विचार पति से मेल नहीं आते है तो वह अलग होना ही ठीक समझती है। **"**शान्ता की बड़ी बहन अपने दो बच्चों के साथ पांच साल से अलग रहकर रह रही है। कान्ता ने उसे दुत्कार दिया है और अपनी चार-सौ की नौकरी में दोनों बच्चों को पाल रही है।**"16** आज पत्नी अपने पति पर निर्भर नहीं रहती है। वह अपना जीवन बिना पति के सहयोग से अपने संतान को मां-बाप दोनों का प्यार देकर बड़ा करने की शक्ति रखती है।

'कटाव' कहानी में देखा जाए तो पति-पत्नी के बीच असमबद्रता है। पति बर्तनो का बिज़नेस करता है और पत्नी एक समय में अपनी कॉलेज में बेस्ट एथलीट बनी होती है। यहाँ पर पत्नी यानी नारी पति, संयुक्त परिवार तथा अनचाहे जीवन के साथ सामंजस्य बनाने का प्रयास करती है। महीप सिंह ने यह युगल को **"**ब्यूटी एंड बीस्ट**"17** से पहचान दी है। इस प्रकार देखा जाए तो पढी-लिखी अपने समय में श्रेष्ठ खिलाड़ी नारी को एक घरबार संभालने वाली औरत का जीवन जीना पड़ता है। यहाँ पर नारी का व्यक्तित्व दाव पर लग जाता है। हमारे समाज में ऐसे ही शादी हो जाती है जिसमें नारी और पुरुष दोनों का आगे जाकर ताल-मेल नहीं हो पाता है और यह बात तलाक तक आ जाती है। ऐसे संबंध में पति-पत्नी के जीवन में मधुरता आये ऐसी कामना करना भी असंभव बन जाता है।

नारी आज के समय वह अपने आप स्वांलबंन बन जाती है जो वह पुरुष को महत्व नहीं दे पाती है। 'ऐसा ही है' कहानी में पत्नी पति को महत्व नहीं देती है क्योंकि वह अपने पति से बड़े पद पर नौकरी करती है, वह अपने पति के बारे में सोचती है कि - **"**पति कोई महिमाशाली चीज नहीं है। अनेक कारणों से उसकी जरूरत होती है। उसमें एक कारण

यह भी है कि वह एक बहुत अच्छा सुरक्षा कवच है।"**18** यहाँ पर नारी यह सोचती है की समाज में रहने के लिए पति की आवश्यकता है। वह अपने पति को पैर की जूती समझती है। यहाँ पर नारी पत्नी बनती है मगर पत्नी की भूमिका नहीं निभा सकती है। पति का अहम को ढेस पहोचती है जिसके कारण संबंध में बिखराव आ जाता है। यह कहानी की नारी के उलटा महीप सिंह की 'पति' कहानी में नारी अपनी जिंदगी अपने हिसाब से जी नहीं सकती है, वह अपने पति के बात को मानकर चलती है। पति आर्मी अफ़सर है वह अपनी पत्नी को अफ़सर की पत्नी बनकर रहना पसंद करता है। मगर पत्नी को समाज सेविका बनकर रहना बहोत अच्छा लगता है। पत्नी जब भी अपने पति के साथ जाती है तो वह जवानों की पत्नी, बच्चों से मिलकर उनके दुख के बारे में पूछती है। यह बात पति को अच्छी नहीं लगती है। यही कारण से उनके बीच दूरी पैदा हो गई है, "हम दोनों एक दूसरे को नहीं समझ सकते है....."**19** यहाँ पर पत्नी बनकर अच्छी भूमिका कर लेती है, मगर वह अपने पति के विचारों से सहमत नहीं है। इसी कारण दोनों के संबंध इतने अच्छे नहीं थे।

अतः देखा जाए तो महीप सिंह की कहानियाँ में नारी के विविध रूप की भूमिका आयाम स्पष्ट होता है। पति-पत्नी संबंधों का अध्ययन करने के प्राशचात कहानी के नारी पात्र शिक्षा व पाश्चात्य प्रभाव से नारी में जागृता को लेकर सजगता बढ़ रही है। नारी अब आत्मनिर्भर हो गई है, वह अपने पति या दूसरे किसी के हाथ नीचे दबकर नहीं रहनेवाली है। पति-पत्नी में आए इस बदलाव को सहज रूप से स्वीकृति देने में असमर्थता महसूस कर रहा है। जहाँ पति ने नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकृति दी है वही पर उनके संबंध मधुर है और जहाँ पुरुष उसे अपने अनुसार चलाना चाहे वहीं पर उनका दाम्पत्य जीवन कुत्सित होने लगता है। आज के समय में नारी पुरुष को जीवन का भागीदारी का एक जीवन

साथी मानती है, भगवान नहीं। ऐसे ही कहा जाए तो नारी की परिवर्तित दृष्टि, स्वतंत्र बनकर रहने की चाह, यही सब भूमिका नजर आती है।

5.2 महीप सिंह की कहानियाँ में मित्र एवं कामकाजी सहकर्मी संबंध में नारी की भूमिका

आज के बदलते समाज एवं युग में सभी संबंध उपयोगिता के आधार पर टिके है। मित्रता के संबंध स्वार्थ पर ज्यादा होते है। पहले के समय में पुरुष-पुरुष मित्र और नारी-नारी मित्र होते है, मगर आज के समय में पुरुष-नारी मित्र भी हो सकते है। ऐसे संबंध को हमारा समाज धृणा की नजर से देखता है। एक नारी पुरुष मित्र क्यों नहीं बना सकती ?

मनुष्य का परिवार संस्था का निर्माण करने के लिए स्त्री-पुरुष का वैवाहिक आधार होता है। जिसके अंतर्गत और आसपास अन्य सभी सामाजिक सम्बन्ध बनते है। परिवार के सिवाए भी स्त्री-पुरुष के बहार के सम्बन्ध भी होते है। बीसवीं शताब्दी में यह परिवर्तन बहुत तेजी से और बहुत व्यक्त रुप में आता दिखाई देता है। हमारे भारत देश में देखा जाऐं तो उन्नीसवीं शताब्दी में शुरू हुए समाज सुधार आन्दोलनों के नारी की दशा सुधारने, उसकी शिक्षा प्राप्ति की ओर अग्रसर होता दिखाई देता था। 20 सदी के पूर्वार्ध की बात करें तो महात्मा गांधी के नेतृत्व में सामुहिक तौर पर महिलाओं के घर से बाहर निकलकर स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने से उनमें अपनी अस्मिता के प्रति जागरूकता बढ़ी। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में भौतिक समृद्धि की तीव्र लालसा उभरी है। इसमें पुरुष ही नहीं, नारी भी समान रूप से महत्वकांक्षी और सक्रिय रुप से दिखाई देती है। आधुनिक टेक्नोलॉजी और गर्भनिरोधक का उपायों ने उस पर से घरेलू कामकाज और पारिवारिक दायित्व के बोझ को बहुत हद तक कम कर दिया है। इन सब कारणों से स्त्री पिछले सौ वर्षों में जितनी है,

पिछले पाँच सौ वर्षों में भी नहीं बदली। महीप सिंह की जीन कहानियों के केन्द्र में नारी-पुरुष सम्बन्ध रहे है वहाँ इसी परिवर्तन को झेलती नारी का चित्रण भी दिखाई देता है।

नारी के सम्बन्धों में आता बदलाव और उसका जो परिणाम को उपजती उलझने एवं तनाव महीप सिंह की उन कहानियों में अधिक उभरा है। जहाँ वे कामकाजी और सहकर्मी नारी को कहानी के केन्द्र में रखते है। यह भी स्वाभाविक है कि नारी ही सम्बन्धों के ढांचे में आते परिवर्तनों की कारक भी है और उनसे सर्वाधिक प्रभावित भी। इसी की उलझी हुई मानसिकता में इन सम्बन्धों की उलझनों के बीच मौजूद है एक नारी।

महीप सिंह की कहानियों में नारी का पात्र कही रुपों में बना हुआ दिखाई पड़ता है। नारी की सबसे बड़ी यह विशेषता है कि वह आत्मसजग है। नारी अपनी खूबियों, ख़ामियों और जरुरतों को स्पष्ट रूप से जानती है। आत्मनिर्भरता उसे स्वाभिमान की किंमत पर सहारा नहीं चाहती। पति का किसी अन्य नारी के साथ रिश्ता होने पर इसका रवैया भिन्न बन जाता है, जो शक के कारण मानसिक रोग से ग्रस्त होने लगती है। 'लोग' कहानी की नारी इस विषय में दो टूक ढंग से बात भी करती है - **"**हर एक को सहारे की जरूरत होती है..... एवरीबडी नीडस इट..... (बीच के शब्द मैं सुन नहीं पाता) क्या मेरा कोई हक नहीं ? आई बिलीव इन गोड..... उन्होंने मुझे समझने की कभी कोशिश नहीं की। उन्हें मुझमें सिर्फ दोष नजर आते है..... अच्छाई एक भी नहीं..... मुझमें अच्छाई नजर भी कहाँ से आए..... उनका ध्यान तो दूसरी तरफ है।**"20**

यह स्थिति के बाद वह अपने लिए आगे का रास्ता चुनती है....."मुझे अपने लिए ज्यादा चाहिए ही क्या ? इस छोटी-सी नौकरी से

गुजारा हो ही जाता है। स्कूल के बच्चों में मन लग जाता है। जैसे-तैसे दिन कट जाएंगे। अब मैं उनके पैरों पड़ने से तो रही।"**21**

बाहर काम करने के कारण कामकाजी नारी अन्य पुरुषों यानी अपने सहकर्मी मित्र के संपर्क में आती है। कई बार उनमें से किसी के साथ उसके प्रेम भी विकसित हो जाता है। जो नारी शादीशुदा है तो वह यह सम्बन्ध में एक अजीब-सी छटपटाहट भर जाती है। ऐसे संजोगों में नारी ने तो वह अपने परिवार को छोड़ सकती है और न ही अपने प्रेम को। वह ऐसी जिन्दगी जीने में विवश हो जाती है। 'शोर' कहानी में कुछ ऐसा ही है - "कुछ समझ में नहीं आता कि क्या हो सकता है ? औरत बोली - "पर मुझसे इस तरह जिया नहीं जा सकता।"**22**

महीप सिंह की कहानियों की कामकाजी नारी लगभग पुरुष जितनी ही व्यवहारिक है। वह हर जगह पर अपनी अच्छी तरह से भूमिका निभाती है। 'घिरे हुए क्षण' कहानी में वह जानती है कि किस प्रकाशक या संपादक के पास रचना भेजने से काम चल जाएगा और किसके पास स्वयं रचना लेकर जाना होगा। प्रेम संबंधों में भी नारी अब उतनी भावुक और ईमानदार नहीं रह पाती है। "कई बार तो विवाह न होने तक वह समय बिताने के लिए किसी मनपसंद पुरुष के साथ सम्बन्ध बना लेती है और विवाह तय होते ही बिना किसी अपराध-बोध के उससे मुंह मोड़ लेती है।"**23** जहाँ पर सम्बन्धों में गहरे भावनात्मक रूप से जुड़ी है उसे वहाँ उपेक्षा मिलती है, वहाँ उसकी कोई भूमिका किसीको नजर ही नहीं आती है। 'सीधी रेखाओं का वृत' कहानी की सवी इसी का एक अच्छा उदाहरण है - "पुरुष यदि एक समय पर एकाधिक रोमांस करते हुए सभी प्रेमिकाओं को बेवकूफ़ बनाने की अहंभरी प्रसन्नता अनुभव कर सकता है, तो स्त्री भी इस मामले में उससे पीछे नहीं है।"**24**

नारी पुरुष को अपने जीवन का पूरक तो मानती है, लेकिन अपनी अस्मिता की कीमत पर नहीं। 'गंध' कहानी में **"**नारी को पुरुष का साथ और प्रेम अपनी शर्तों पर चाहिए। गैर-जिम्मेदार पुरुषों के हाथ का खिलौना बनकर जीना उसे स्वीकार नहीं है।**"25** इस स्थिति से वह दो टूक इनकार कर देती है। वह अपनी तलाश में कई बार धोखा खाती है लेकिन टूटती नहीं है।

महीप सिंह की कहानियों में नारी अपनी भूमिका अच्छी तरह निभाती भी है और भूमिका ढूंढती भी है। नारी इतनी आत्मसजग और स्वागही है कि अपनी पहचान अपने व्यक्तित्व से बनाना चाहती है, पिता या पति का सरनेम भी नहीं चाहिए उसे। 'माँ' कहानी में सरिता सरीन शादी से पहले सिर्फ सरिता थी। उसके पिता भी कोई सरनेम गाते होगे लेकिन उसे सरिता रहना ही अच्छा लगता था। सारी डिग्रियों में उसने सरनेम के बिना ही प्राप्त कर ली थी और नौकरी भी। नारी सारी भूमिका निभाते हुए भी वह अपना निजी व्यक्तित्व बनाए रखना चाहती है। इस पर आपत्ति करते वह अपने पति से वह तर्क करती है कि - **"**लेकिन सरिता रहकर भी मैं आपकी बीवी हूँ..... शुचि की मां हूँ। क्या सरीन की मोहर लगाना इस रिश्ते के लिए जरूरी है ?**"26**

नारी अपने कामकाजी जीवन में उतनी ही सफल और अपने काम के प्रति उतनी ही गंभीर है, जितना उसका पति। इस के कारण परिवार के परम्परागत सम्बन्ध नहीं पाये जाते है जो पहले थे। परिवार का बिखर जाना या अकेले पड़ते जाना इन स्थितियों की अपनी नियति है। यह नारी इस स्थिति में आकर कभी- कभी अचानक पुरुष के अकेलेपन को पहचानती है तो किंकर्तव्यविमूढ और आत्मग्लानि से ग्रस्त हो उठती है - **"**मैं उन्हें पल-पल टूटता..... पल-पल मरता देखती रही..... मैंने कुछ नहीं किया।**"27** यह नारी को अपने परिवार की दृष्टि में स्वीकृत होना है तभी

उसकी आत्मग्लानि दूर होगी और वह अंकुठ भाव से सभी भूमिका निभाकर अपनी पहचान बना सकती है।

संक्षेप में कहाँ जाए तो नारी और पुरुष के बीच पहले जैसी प्रगाढ़ता नहीं रही है। मगर कभी-कभी कहीं जगह पर दोनों के बीच अपवाद स्वरूप आशा भी नजर आ जाती है। नारी अपने कामकाजी होने के बावजूद वह अपनी कमी भी किसी भी जगह अपनी जो भूमिका है वह निभाना नहीं भूलती है। आजकल के संबंधों पर बेरोज़गारी, महानगर के तोड़-तडीके, आधुनिकरण, विदेशी शिक्षा आदि तत्वों का प्रभाव ज्यादा दिखाई देता है।

5.3 महीप सिंह की कहानियाँ में विवाहेतर संबंध में नारी की भूमिका

प्रत्येक देश में विवाह नाम की एक ऐसी संस्था पाई जाती है। कहा जाता है कि स्त्री-पुरुष के समागम में कोई बाधा नहीं थी। दीर्धतम त्रुषि के समय में यह यौनाचार स्वच्छंदता अतिरेक की सीमा तक पहुंच गई थी। उन्होंने विवाह प्रथा द्वारा इस स्वच्छंदता पर रोक लगाते हुए कहा है कि - **"**मैं आज से ऐसी लोक-मर्यादा स्थापित करता हूँ कि पावजजीवन नारी का एक ही पति उसका सहारा होगा। पति के जीवित रहने या मर जाने पर भी कोई नारी दूसरे पति की शरण में नहीं जा सकेगी। यदि कोई नारी दूसरे व्यक्ति के पास जाएगी तो वह नि:संदेह पतिता होगी।**"28** इस प्रकार दीर्धतम त्रुषि के द्वारा शुरू की गई यह प्रथा आज भी समाज में देखी जा रही है। प्रत्येक समाज में विधिवत् विवाह के बाद ही स्त्री-पुरुष को पति-पत्नी का दर्जा मिलता है। विवाह को धार्मिक, सामाजिक, व कानूनी संरक्षण जगत में प्राप्त है।

आज के बदलते आधुनिक युग में विवाह के प्रति नारी-पुरुष का दृष्टिकोण बदल गया है। कमलेश्वर जी ने कहा है कि - **"**जन्म-जन्मनतरों के संबंध की कोई कल्पना उसके मानस में नहीं रह गई है। स्त्री ने

अपना व्यक्तित्व प्राप्त किया है और वह इसी जीवन अवधि में सम्मानजनक शर्तो पर रखना चाहती है।"**29** इस बदलते आधुनिक समाज के परिवेश के साथ ही नारी अपनी स्वतंत्र पहचान के लिए अधिक सजग बनती जा रही है।

महीप सिंह की कहानियों में विवाहेतर संम्बधों के अनेक रुप- रंग दिखाई पड़ते है। इनमें बहोत लम्बे समय तक चलने वाले प्रेम सम्बन्ध, कुछ समय बिताने के लिए सम्बन्ध, नारी की सोहबत से एकरस जीवन में कुछ सरसता लाने की इच्छा वाले सम्बन्ध, मित्रता के रूप में और नौकरी या व्यवसाय में उपयोग होने वाले सम्बन्ध भी है।

'शोर','सीधी रेखाओं का वृत', और 'गंध' कहानियों में विवाहेतर संम्बधों का नैतिक मूल्यबोध के द्वंद्व में तड़पते मानव के संकट को देखा जा सकता है। 'शोर' की नारी शादीशुदा है और उसके दो बच्चों का संदर्भ भी कहानी में आया है। वह जिस मर्द से प्रेम करती है, उसके साथ रहना चाहती है। वह उसके साथ भाग जाने को भी तैयार है, लेकिन वह मर्द न तो उस औरत के घर छोड़ने को स्वीकार कर पाता है और न ही स्वंय को आर्थिक रूप से इस तरह का दायित्व निभाने में समर्थ पाता है। या वह जहर खाकर मर जाना चाहती है। "मैं मरना चाहती हूँ पर एकदम नहीं। क्या कोई ऐसा जहर नहीं जिसे खाकर मैं धीरे-धीरे मरू ? किसी को पता भी न चले कि मैं जहर खाकर मरी हूँ।"**30** इसलिए वह प्रेम-संबंध की सधनता को जीते हुए भी नारी की बेचैनी को समझते हुए भी जानता है कि - "ऐसे ही जिएंगे क्या यह जिंदगी ऐसे ही गुजरेगी ?"**31** औरत बोली। कोफी पीते हुए मर्द ने प्याला रखकर औरत की तरफ देखा। दोनों एक दूसरे की ओर देख रहे थे। दोनों कुछ बोले नहीं। "यह जिंदगी और किस तरह गुज़र सकती है ?"**32** मर्द बोला।

एक आधुनिक नारी होने का दंभ 'सीधी रेखाओं का वृत' कहानी में दिखाई देता है। शादीशुदा मिनी को भी झेलना पड़ता है जब उसकी अविवाहित प्रेमिका सवी उससे शादी कर लेने के लिए आगाह करती है। वह जानता है कि यदि वह सचमुच दूसरी शादी करने के लिए तैयार हो जाए तो उसकी पत्नी को कोई आपत्ति नहीं होगी, लेकिन वह उसे बिना किसी अपराध की सजा देने को तैयार नहीं है। सवी के साथ सम्बन्ध बने रहने तक ठीक है, लेकिन निर्णय के क्षण में वह खुद अपनी पत्नी के प्रति अधिक जवाबदेह पाता है। प्रेमिका को खो देने की कसक और उसे फिर से पा सकने की ललक अंत तक उसके भीतर उभरकर रहती है - **"**और इस सवी को एक बार पा लेने की ललक बड़ी शिद्दत से उसके अन्दर जाग उठती है।**"33**

'बाद की बात' कहानी विवाहेतर प्रेम संबंधों पर आधारित है। रोमा बलवीर से प्यार करती है और उसी से शादी करना चाहती है। लेकिन बलवीर रोमा के साथ प्यार के रिश्ते को शादी में बदलना नहीं चाहता है। उसी परिस्थिति का फायदा अविनाश उठाता है, **"**तब अविनाश के साथ धीरे-धीरे संबंध विकसित हो गया-अस्थायी सम्बन्ध क्योंकि अविनाश अविवाहित था।**"34** अविनाश के अलावा भी दफ्तर में कई सहकर्मी रोमा के साथ रोमांस का इरादा रखते है। इस प्रकार कहानी में शादी तक समय-पसार करने तक ही प्रेम सम्बन्ध रखते है। रोमा की शादी करके स्थायी प्रतिबंध सम्बन्ध जीने की उसकी आकांक्षा समय के साथ बढ़ती ही जा रही है। सही पात्र मिलने में देरी उसे असुरक्षा-भावना से भर देती है।

वक्त-बिताऊ संम्बधों को ज़रा-सा गंभीरता से लेते ही होने वाली पीड़ा को व्यक्त करती कहानी है, उसका नाम है 'उजाले के उल्लू'। तोष और कुलदीप का सम्बन्ध अचानक ही तेजी से बना और दोनों एक दूसरे

के अन्य रोमांसो का आभास पाते हुए भी मिलते रहे, क्योंकि उन्हें एक-दूसरे का साथ अच्छा लगता था। लेकिन एक दिन कुलदीप तोष को टैक्सी में किसी और के साथ सटकर बैठे और हंस-हँसकर बाते करते देख लेता है तो एक उदासी उसे घेर लेती है और वह तोष से कह उठता है - **"**तोष मेरी बात समझने की कोशिश करो। मैं पूछ रहा हूँ कि क्या हमारे बीच अभी भी बहुत से परदे नहीं है? बहुत सी दीवारें नहीं है? बहुत सी अनकही अनबताई बाते नहीं है ? हम दोनों एक दूसरे से प्रेम करने का दम तो भरते ही हैं, पर क्या हम दो अच्छे मित्र भी है? और दो अच्छे मित्र एक दूसरे के सामने अपना समूचापन लेकर नंगे नहीं हो जाते ?**"35** पर कहानी के अंत तक आते आते वह समझ जाता है कि इस युग में यदि मानसिक संतुलन बनाए रखकर जीना है और कुछ अच्छे पलों का सुख भी सहेजना है तो बहुत-सी बातों की तरफ से आंखे बंद करना सीखना होगा। तब वह कहता है - **"**तोष हम लोग उल्लू है..... उजाले के उल्लू। हम कहते उजाले की बात है, पर रहना चाहते है अंधेरे में। तोष हमारी जीन्स जली हुई है..... झुलसी हुई है। वह हम किसी का दिखा नहीं सकते इसलिए हम सब आंखे बंद किए रहते हैं..... न तुम्हारा झुलसा हुआ चेहरा मुझे दिखाई दे, न मेरा तुम्हें।**"36**

जिन्दगी में सब कुछ अच्छा हो और व्यवस्थित ढंग से चल रहा हो तो उस एकरसता से भी ऊब होने लगती है। इस ऊब को तोड़ने के लिए कभी-कभी व्यक्ति कहीं रोमांस करके कुछ थिल पैदा करना चाहता है। ऐसी ही एक महीप सिंह की कहानी 'गंध' में का नरेश पत्नी की सहेली से कहता है - **"**जीवन के इस बंधे हुए रुटीन में कुछ गड़बड़ आने लगे तो घबरा भी जाता हूँ और इस जीवन से बेहिसाब ऊबा हुआ भी हूँ।..... शायद तुम मेरी इस ऊब को तोड़ सको।**"37** शान्ता भी पुरुष की ओर से यौन-शोषित मालूम होती है। शान्ता की इच्छा के विरुद्ध उसकी सहेली का

पति नरेश यौन-संबंध के लिए मजबूर करता है। नरेश अपने वैवाहिक जीवन की निरसता को दूर करने के लिए शान्ता को देहरादून घुमाने हेतु ले जाकर उससे शारीरिक संबंध बनाता है। शान्ता की इच्छा के विरुद्ध होते हुए भी उसके साथ नरेश द्वारा किया गया संभोग उसके मन, मस्तिष्क और शरीर में एक नफरत पैदा कर देता है। आज के समय में एक नारी दूसरी नारी पर भी भरोसा रखने लायक नहीं रही है।

मिसेज मेहता अत्याधुनिक मानसिकता की प्रतीक 'कुछ और कितना' कहानी में दिखाई देती है। वह शिक्षित है और आत्मनिर्भर भी है। उसका पति दूसरी नारी से संबंध बना लेता है, यह देखकर वह भी स्वतंत्र होकर संबंध बनाने के लिए आज़ाद हो जाती है। पर वह इतनी अबला नहीं है कि वह अपना दुख देखकर रोने बैठ जाऐ। वह नौकरी करती है साथ ही वह अन्य पुरुषों से संबंध भी रखती है। जब उसका एक पुरुष मित्र पूछता है कि उसको इतने मित्र कहां से मिल जाते हैं, तब वह कहती है - "मुर्गे तो सड़कों पर मारे-मारे फिरते है। बस थोड़ा सा चारा डालना पड़ता है। और पिछले मुर्गे का क्या किया ? क्या नाम है उसका ? देसाई ? मेरा ख्याल है कि उस बेचारे को तुमने चारा भी ज्यादा नहीं डाला। मैनें पूछा था। वह ठहाके से हंसी थी-वह मुर्गा मन हीं, चूजा था।"**38** मिसेज मेहता अपनी शादीशुदा जीवन में पुरुषों को रूमाल की तरह बदलते रहने वाली नारी है, उसके जीवन में कोई निश्चिंतता नहीं दिखाई देती। क्योंकि हमारे समाज में ऐसी नारी के लिए कम स्थान मिलता है, वह अपने आपको सामाजिकता से कटी हुई है ऐसा अनुभव करती है अपने जीवन के अकेलेपन को भरने के लिए शराब और सिगरेट का सहारा लेती है। वह अपने आप बोलती है कि - "मेरा क्या होगा..... मेरा क्या होगा..... वह एकटक आसमान में छितरे हुए तारों में कुछ देख

रही थी और धीरे-धीरे बोल रही थी।"**39** इस तरह विवाह के बाद के संबंध में कभी भी कायमता नहीं बन सकती है।

पुरुष समाज भी नारी की अवदशा के लिए भी जिम्मेदार है। पुरुष अपनी यौन इच्छा के लिए नारी को तन समर्पण या वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर करता है। महीप सिंह की 'मैडम' कहानी वैश्या वृत्ति के आधार पर है। कहानी में पुरुष की कामेच्छा ही नारी को वेश्यावृत्ति करने के लिए विवश करती है। कहानी में नारी सामाजिक जटिलता के बीच अपना जीवन बिताने के लिए मजबूर बन जाती है। कथा नायिका को बचपन में से ही पिता या भाई का प्यार नहीं मिल पाता है। वह एक वेश्या की बेटी है, इसी कारण कोई भाई या पिता क्या कोई पति बनने के लिए भी तैयार नहीं है। वह पुरुषों को दैहिक सुख देती है, मगर समाज में उसे नफरत मिलती थी। **"**मेरी अतृप्त इच्छाओं ने आखिर मुझे होटल में रहनेवाले अन्य लोगों की ओर बढ़ाया। यहाँ भी वहीं बात हुई। कोई पिता बनने के लिए तैयार नहीं। कोई भाई नहीं बनना चाहता। बहुत दिनों संघर्ष करते-करते मेरी शक्ति क्षण हो गई है। और हारकर मैं इस निर्णय पर पहुँचीं हूँ कि यदि तुम पुरुष किसी नारी को प्रेम और स्नेह देने का मूल्य उसके देह-समर्पण के रूप में ही लेना चाहते हो तो चलो यह भी ले लो, किन्तु अपने प्रेम से वंचित न करो।"**40** इस स्थिति में वह आयु में बड़े सेठ की दूसरी पत्नी बनना स्वीकार कर लेती है, वह सिविल मैरेज करने के लिए भी तैयार हो जाती है। कहानी में नारी का यौन संबंध उसकी इच्छा नहीं थी, मगर उसके हालात उसे यह सहारा लेने के लिए मजबूर करते है।

'झूठ' कहानी में विवाहेतर प्रेम संबंध को छिपाने अपने ही भाई पर बदचलन होने का झूठा आरोप बनाता है। **"**एक औरत से उनका नाजायद संबंध हो गया है।..... हां और उसे गर्भ ठहर गया है। सबसे मुसीबत की

बात यह है कि वह एक विधवा है।"**41** हमारे भारतीय समाज में इस तरह के संबंध को स्वीकार नहीं करते है। उपर से एक विधवा से प्रेम। क्या एक विधवा नारी को प्रेम करने का कोई हक नहीं है ? वह अपनी जिन्दगी फिर से नये तरीके से शुरू नहीं कर सकती है ? ऐसे संबंध को छिपाने के लिए पुरुष अपनी पत्नी से झूठ बोलते है।

इस प्रकार महीप सिंह की कहानियों में विवाहेतर संबंध में नारी के साथ स्वार्थपूर्ण प्रेम को प्रकट किया गया है। ज्यादातर संस्कारों से दबा प्रेम यौनशोषण, पूर्ण समर्पण का अभाव, निर्णय-अनिर्णय में जूझती नारी, सब उभरकर सामने आते है। नारी विवाह से पूर्व प्रेम ज़रुर करती है लेकिन समय पड़ने पर वह अपने अतीत के प्रेम को भूलकर आगे भविष्य के लिए ज्यादा जागृत होती है। नारी को हर जगह अपनी भूमिका निभाकर ही आगे बढ़ना पड़ता है। नारी के परिवार, समूह और समाज के बीच संघर्षों के साथ जीवन जीने के लिए मजबूर कर रहा है। आधुनिक समय में विदेशी अनुकरण और नैतिक मूल्यों में परिवर्तन ने व्यक्ति के भावनात्मक बौद्धिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया है। ज्यादातर कहानी में देखा जाए तो नारी कोई भी स्थिति में से परास्त हुए बिना जीवन जीने की राह बना ही लेती है।

5.4 महीप सिंह की कहानियाँ में विवाह के पहले प्रेम संबंध में नारी की भूमिका

विवाह के पहले के संबंध यानी पुरुष और नारी के बीच विपरीत लिंग के रूप में संबंध। आज के आधुनिक समय में पश्चिमी संस्कृति और शिक्षा के प्रति जागृतता के कारण दोनों के व्यवहार में स्वच्छदता आई है। डॉ.सुनंतकौर ने लिखा है कि - "विवाह पूर्व के संबंध इसमें नारी पुरुष अपने विपरीत लिंग के प्रति आकर्षित होकर संबंध बना लेते है ये संबंध

कई बार भावुकता में आकर बन जाते हैं या फिर जीवन की नीरसता को तोड़ने की लिए।**"42** हमारे आस-पास समाज में विवाह के पूर्व के संबंध में नारी-पुरुष दोनों ही जिम्मेदार है। आधुनिकता की चकाचौंध में मानव सुख को ढूँढता है। ऐसे संबंध बहोत पहले से चले आते है मगर स्वातंत्र्योतर युग में इन संबंधों को बहोत ज्यादा बढावा मिल रहा है। हरेक समाज ज्ञाति में ऐसे संबंधों को भर्त्सना की जाती है मगर फिर भी बढावा मिलता रहता है।

महीप सिंह की कहानियों में विवाह के पूर्व प्रेम संबंध की बात करें तो 'विपर्यय' कहानी में रत्ना व माला अपनी जिन्दगी आज़ाद रुप से जीती है। दोनों प्रेम संबंध बनाती है वह टूट भी जाता है मगर वह दोनों नहीं टूटती है। वह अपने अनुसार दूसरा संबंध बना लेती है। उन्हें जब लगता है कि इस पुरुष से उनके विचार का मेल नहीं बैठता है तो वह एक नया साथी ढूंढने में झिझकती नहीं है। इसलिए प्रोफेसर कहते है कि - "हम लोग समझते है नारी बहुत भावुक होती है यह ठीक भी है। पर इस भावुकता के साथ-साथ उनमें अपने लिए एक व्यवहारिक दृष्टिकोण भी होता है। हर लड़की प्रेम के साथ-साथ जीवन में सुरक्षा चाहती है, विशेष रूप से आर्थिक सुरक्षा।**"43**

महीप सिंह की अगली कहानी 'परवरिश के लिए' एक आर्थिक विवशता के कारण काम करने वाली नारी की कहानी है। पदमा नामक नारी आर्थिकता के कारण एक फिल्मी हीरो के साथ संबंध बना लेती है। मजबूरी के कारण वह प्रेम संबंध रखती है। उसके घर में उसके अलावा बूढ़ी माँ कमाने वाली है, अतः वह उसे काम से निवृत्ति देकर वह खुद काम करने लगती है। पैसे की लालच के कारण वह हीरो के साथ नाम कमाने की लालसा उसे यह प्रेम संबंध की तरफ खींचता है। आनन्द के साथ संबंध रखने से उसे पैसे मिल जाते है, मगर उसकी भावनाओं को

तब ठेस लगती है जब वह गर्भवती बन जाती है। साथ ही उसे आनन्द की प्रताड़ना का शिकार बनना पड़ता है, "सस्ती लड़कियों को मैं इसीलिए मुंह नहीं लगता। पता नहीं किसका पाप मेरे गले मढने आ गई है। पदमा की आंखे भर आई।"**44** इस तरह नारी आर्थिकता की मजबूरी वश यह संबंध को अवमानना को सहती है।

'ब्लाटिंग पेपर' कहानी में आधुनिकता के मानसिकता में रंगी प्रीति नाम की लड़की अभागी है। क्योंकि वह पुरुष के बनावटी प्यार का आघात सहती, एक के बाद एक पुरुष की और शादी के लिए आंश लगाई रहती है। प्रीति एक पुरुष का सहारा पाने के लिए अरोरा, मनोहर, समर, जगदीश आदि पुरुष के सामने अपने आपको समर्पित कर देती है। लेकिन सभी उसके साथ अस्तित्व से खिलवाड़ करते हुए उसकी जिन्दगी से निकल जाते है। "प्रीति की इच्छा पूर्ण नहीं हुई। समर ने आर्टिस्ट होने के नाते पूरी नहीं की। मनोहर पर से उसका विश्वास टूट गया।"**45** सभी पुरुष मात्र उसे झूठे भरोसे, झूठे सपने और गलत आशाओं से और कुछ नहीं दिया। इसलिए प्रीति अपनी तुलना एक ब्लाटिंग पेपर के साथ करती है। "वैसे तो आप जानते है कि मेरी अपनी कोई समस्या नहीं है।। गिरी हुई स्याही को सुखाने की समस्या साधारण कागज़ों की होती है..... मैं तो ब्लाटिंग पेपर हूँ।"**46** यहाँ पर प्रीति के संबंधों के पीछे शादी करने का मंतव्य है और इसमें वह असफल हो जाती है। 'ब्लाटिंग पेपर' के जैसी ही 'गंध' कहानी है। इस कहानी में शान्ता शादी करने के उद्देश्य से अनेक पुरुषों से प्रेम करती है, मगर सब लोग मतलबी निकलते है। वह अपनी जिन्दगी में आए एक अन्य पुरुष से कहती है - "मुझे पता है यह दर्जा तुम मुझे नहीं दे सकते। खैर तुम्हारी मजबूरी मैं समझती हूं। पर अनिल की क्या मजबूरी थी। श्याम और सुबोध की क्या मजबूरियां थी ? सब मेरी जिन्दगी में आए..... सब पति बनने का मौका ढूँढते रहे, पर जब

पत्नी का दर्जा देने की बात आई तो कान दबाकर खिसक गए।**"47** मगर शान्ता इतने सारे पुरुषों से धोखा खा कर भी टूटती नहीं है वह अन्यत्र शादी करने में कायम रहती है और एक नारी की तरह अच्छी भूमिका भी निभाती है।

'घिरे हुए क्षण' और 'घिराव' कहानी में पति-पत्नी के बीच व्यवहारिक आदान-प्रदान का अभाव उनके शादीशुदा जीवन में बहुत समस्या आ जाती है। दोनों कहानी में पति-पत्नी विगत को भुलाने और आगत के आतंक से मुक्ति की चेष्टा में पीड़ित मालूम होते है। 'घिरे हुए क्षण' में दिलीप वह मोहिनी के विवाह पूर्व प्रेम विवाहित जीवन में बीच में आता है। दिलीप इतना संकाशील है कि वह अपनी पत्नी के साथ अपने ही विवाहपूर्व के प्रेम संबंध को लेकर संकाशील बनता है, दिलीप को लग रहा है मोहिनी कहीं खो गई है। चोपड़ा, मितल, शर्मा पता नहीं किन-किन के स्पर्श का बोध उसे मोहिनी के स्पर्श से होने लगता है। कभी-कभी उसे बहुत रोमांटिक ख्याल आता है वह मोहिनी को कहीं भगा ले जाए। जैसे वह उसकी पत्नी नहीं है वह एक पराई औरत है - **"**कितने ही पराये लोग से घिरी हुई एक पराई औरत।**"48** यह कहानी में पत्नी अपनी पूरी अच्छी तरह से भूमिका निभाती है मगर पति संकाशील हो जाता है। पति को लगता है कि पत्नी उसके साथ तुरुप चाल चल रही है। इन दोनों पति-पत्नी के बीच विवाह पूर्व प्रेम शादीशुदा जीवन में बाधा उत्पन्न करता है। 'घिराव' कहानी में तलाक़शुदा सुम्मी अपने पूर्व पति के खयालों से घिरी नजर आती है। वह अपने अकेलेपन की ऊब दूर करने अन्य पुरुष के साथ प्रेम का रिश्ता बनाती है। **"**मैं अमर से डरती नहीं..... शायद डरती भी होऊँ। डर इस बात का नहीं है कि मुझे नुकसान पहुँचाएगा। मैं जानती हूँ वह बहुत बुजदिल किस्म का आदमी है। पता नहीं क्या बात है। अपने

आसपास उसकी उपस्थिति का आभास मुझे बैचेन कर देती है। क्या मेरी यह बेचैनी डर है ?"**49**

'उजाले के उल्लू' कहानी में तोष और कुलदीप का विवाह पूर्व संबंध बनाने का उद्देश्य केवल जीवन में समय व मस्ती करने का ही है। दोनों एक दूसरे से प्रेम करते है, मगर दोनों अपने प्रेम में वफ़ादार नहीं है। कुलदीप व तोष के बहोत लोगों से संबंध है, मगर जब तक अपनी आंखों से एक दूसरे को किसी अन्य के साथ नहीं देख लेते तब तक अच्छा चलता है। जब वह दोनों एक दूसरे को किसी और के साथ देखते है तो स्थिति बिगड़ने लगती है। "नहीं तोष..... आंखे तो बन्द ही रहने दो। आंखे खोलने से रोशनी दिखाई देती है और यह रोशनी न मुझे अच्छी लगती है न तुम्हें।..... तोष हम उजाले के उल्लू हैं..... उजाले के उल्लू। हम कहते उजाले की बात है, पर रहना चाहते है..... झुलसी हुई है। वह हम किसी को दिखा नहीं सकते, इसलिए हम सब आंखे बन्द किए रहते है..... न तुम्हारा झुलसा हुआ चेहरा मुझे दिखाई दे न मेरा तुम्हें।"**50** यहाँ पर देखा जाए तो कुलदीप वह तोष के विवाह पूर्व प्रेम में तभी तक मधुरता बनी रहती है जब तक वे एक दूसरे के संबंधों के बारे में अनजान बने रहते है। जब जानने की कोशिश करते है तो संबंध बिगड़ने लगते है।

इस तरह विवाह पूर्व प्रेम संबंधों में आज की युवा पीढ़ी या नारी के लिए वह वक्त बिताने के मौज़ मस्ती करने के लिए ज्यादा रह गये है। नारी प्रेम संबंध पूरी भावना के साथ निभाती है, मगर पुरुष उसका दिल तोड़ देता है। भावुकता में आकर प्रेम संबंध आजकल नहीं बनते है। आर्थिक मजबूरीवश या विवाह की लालसा भी इन का कारण बनता है।

5.5 महीप सिंह की कहानियाँ में जटिल पात्रों में नारी की भूमिका

महीप सिंह की कहानियों में मानव के नये कही संबंध हमारे सामने उन्होंने रखा है। वैसा ही एक संबंध कही जटिल पात्रों है जिसका कोई नाम है या नाम नहीं है ऐसा संबंध। कहानी में नारी-पुरुष संम्बधों के संदर्भ में कुछ ऐसे पात्रों के भीतर झांककर उनके अंतर्दद्व और वेदना के साथ-साथ उनकी जिजीविषा को पहचानने का प्रयास किया है, जिनके भीतर किसी कारणवश मनोग्रंथि बन गई है। ये मनोग्रंथि उन्हें जीवन को अकुंठ भाव से स्वीकार नहीं करने देती, इसलिए वे भावनात्मक रूप से अवरुद्ध जीवन जीते रहते है। कभी ये अवरुद्ध भावनाएं अपना मार्ग ढूंढ लेती है तो कभी सामाजिक संस्कारों के चोले में उदातीकरण की प्रक्रिया में दिखाई देती है।

'कील' कहानी की मोना स्वंय को पिता की नजर से देखने की आदी हो जाती है क्योंकि पिता उसके अन्दर इस तरह से भाव भर देते है कि - **"**वह कोई मामूली लड़की नहीं है। यह बात उसके अन्दर गहराई तक बैठ गई है कि उसे हर लड़की बहुत मामूली नजर आती है और कोई लड़का अपने काबिल नजर नहीं आता।**"51** उससे विवाह के लिए उत्सुक हर युवक उसे साधारण लगने लगता है। इसी के साथ-साथ बढती उम्र का अहसास भी उसे दंशित करने लगता है। इस स्थिति में मां का पत्र उसे अपने जीवन पर स्वंय अपने अधिकार के प्रति सचेत करता है और वह पिता के प्रति अतिरिक्त निर्भरता को झटककर एक नारी के रूप में निर्णय लेती है। इसी के साथ वह अपनी मनोग्रंथि से मुक्ति पा लेती है। कहानी के अंत में यह स्वंय को आईने में देखती है। यह देखना अब पिता की दृष्टि से नहीं है बल्कि एक नारी का स्वंय को देखना पहचानना है। इसलिए वह अपने चेहरे पर उभरे कील को भी देख सकती है जो उस

पर वस्तुतःपिता के अतिरिक्त प्रभाव का प्रतीक है और वह उसे खुरच देती है।

महीप सिंह की 'एक लड़की शोभा' कहानी की शोभा हीन भावना से पीड़ित है। वह खुद को अपनी दोनों बहने एक बड़ी और एक छोटी से कम सुन्दर और समझदार मानती है। बड़ा परिवार होने के कारण किसी को भी उसके मन में क्या चल रहा है एहसास भी नहीं होता है। वह बाहर जाने किसी से बात करने या अपने को अभिव्यक्त तक करने से कतराती है। उनके पड़ोस में रहने वाला प्रोफेसर उसकी समस्या को समझकर बड़े मनोवैज्ञानिक तरीके से उसके व्यक्तित्व की विशेषताओं से अवगत कराता है, जिससे कारण उसके अन्दर आत्मविश्वास बढ़ने लगता है। उसे अपने आयु वाले लड़कों की नज़रों में अपने प्रति आकर्षण दिखाई देने लगता है। वह उन्मुक्तत हँसने और गाने लगती है। कुछ समय बाद उसने मिलने पर नैरेटर को लगता है कि - **"**किसी बंधे और काई से भरे तालाब को उमगती नदी में बदल दिया गया है।**"52**

'मैडम' कहानी की नायिका सब लोग उसे 'मैडम' कहते है, यह भी एक जटिल पात्र बना है। एक बड़े सेठ की रखैल होटल के एक कमरे में अकेले रहने वाली आसपास के कमरों के निवासियों से सम्बन्ध, उसकी पढने की परिष्कृत रुचि, उसकी बातचीत में उभरकर आती स्नेहमयी छवि, यह सब उसे बहुत रहस्यमयी बनाता है। अन्य लोगों का कौतूहल उसके विभिन्न पुरुषों का साथ संम्बधों के ईद -गिर्द ही चक्कर काटता रहता है, लेकिन नैरेटर जो एक प्रोफेसर है, उसकी विचित्रता के कारण तक पहुंचना चाहता है। मैडम उसे अपनी कहानी बताती है। वह पुरुष का सानिध्य पाना चाहती है, लेकिन कभी वेश्या रह चुकी माँ की बेटी होने के कारण कोई पुरुष पिता या भाई तो क्या विधिवत पति बनने को भी तैयार नहीं होता। इस परिस्थिति में वह आयु में बड़े सेठ की दूसरी पत्नी

बनने के लिए तैयार हो जाती है। सेठ उसे वह संग-साथ और स्नेह नहीं दे पाता है जिसकी उसको इच्छा थी। वह जिस होटल में सेठ ने उसे रखा था, उसी के अन्य लोगों से वह सम्बन्ध बना लेती है। **"**प्रोफेसर मैं पुरुष का प्रेम चाहती हूँ, किसी भी शर्त पर, किसी भी मूल्य पर। आज मैं होटल के जिस कमरे में जाती हूँ लोग मुझे बैठाते है, मेरे साथ हंसते और बाते करते है, क्योंकि इसके बदले में वे मुझसे कुछ अपेक्षा करते है। यदि उनकी वे इच्छाएं पूर्ण न हो तो वह दूसरे दिन से मुझसे बात तक नहीं करना चाहेंगे। अपने कमरे में पैर तक नहीं रखने देगें और मैं सारे दिन अपने ही कमरे में अकेली पड़ी मर जाऊँगी।**"53** यहाँ मैडम नायिका नारी इतनी आत्मसजाग है कि अपने मन का इतना सटीक विश्लेषण कर सकती है।

'एक्स्ट्रा' कहानी में त्रस्त सावित्री की परिस्थिति दिखाई गई है। अपनी आर्थिक स्थिति को अच्छी करने की इच्छा से वह हीरा नाम की लड़की की मदद से फिल्मों में काम मिल जाता है और आर्थिक स्थिति अच्छी होने लगती है। मगर वहाँ पर काम करने वाले सारे पुरुषों की आंखों में कामुकता नजर आती है और यह स्थिति को निहारती रहती है। अभी उसके **"**भविष्य के वैभवपूर्ण चित्र नेत्रों के सामने उभरते आ रहे थे कि उसने अनुभव किया कि वह चोपड़ा साहब की एक बाँह की लपेट में आती जा रही है..... जैसे कोई मासूम सी भेड़ किसी अजगर की लपेट में आती जा रही हो।**"54** सावित्री को हर कोई यह सलाह देता है कि यहाँ सती-सावित्री बन कर काम नहीं चलता है, लेकिन सावित्री अपने नाम की सार्थकता बनाए रखना चाहती है और उसे यह काम छोड़ना पड़ता है। यहाँ पर नारी अपने काम में बहोत ही अच्छी तरह भूमिका निभाती है मगर वह अपनी इज़्ज़त बचाने के लिए वह अपना काम तक छोड़ देती है।

हमारे समाज में एक नारी और पुरुष का संबंध यौन तत्व के अतिरिक्त और कुछ विचार ही नहीं सकते है। ऐसी ही एक कहानी 'एक स्त्री एक पुरुष' में नारी और पुरुष के नये संबंध उभर कर सामने आते है। आज के समय नारी और पुरुष के संबंधों के बीच बहोत बड़ा परिवर्तन देखने को मिलता है। यह कहानी में एक व्यक्ति अपने मित्र की पत्नी को लखनऊ से लेकर ट्रेन से कानपुर आ रहा होता है। उनके साथ सफर कर रहे लोगों को इन दोनों के संबंधों को लेकर जानने की उत्सुकता बढ़ती जा रही है। **"**एक कहता है, अच्छा जोड़ा है। जोड़ा? दूसरा जो थोड़ा तार्किक सा था तुनक कर बोला-तुम कैसे कह सकते हो कि ये पति-पत्नी है? संभव है कि इनमें कोई दूसरा संबंध हो।**"55 "**दूसरे का विचार है आपको क्या मालूम? शायद भाग कर ही ले जा रहा हो?**"56 "**तीसरे कहते है और इन कॉलेज, यूनिवर्सिटीयों की शिक्षा है कि क्या। वहाँ लड़के पढ़ने थोडे जाते है प्रेम व्यापार सीखने जाते है।**"57** यह कहानी परिवेश की रुण मानसिकता की ओर संकेत करती है क्योंकि ऐसी बेतकल्लुफी मित्र की पत्नी के साथ चिंता का विषय बन जाता है। क्या नारी पुरुष के साथ भाई, मित्र, पिता या आदि कोई भी संबंध नहीं बना सकती है ? बस एक पति का ही रिश्ता होता है क्या ?

'शास्त्री जी' कहानी में एक वेश्या के रूप में शान्ता की पहचान है। उसके जीवन में एक अधूरापन नजर आता है। वह बहोत सारे लोगों से संबंध बना चूकी है और बहोत सारे संबंध बनाने अभी भी बाकी है। वह किसी भी पुरुष को पूरा नहीं पा सकती है, थोड़ा बहोत तो बाकी रह जाता है। शान्ता रामलीला करने वाले शास्त्री जी को पाना चाहती है मगर इसके लिए शास्त्री जी बिलकुल तैयार नहीं है। शास्त्री जी शान्ता की समस्या को समाधान करते हुए सलाह देते है कि - "क्यो नही किसी एक को पा लेती ?..... और उसे इतना पा लो कि किसी और को पाने की जरूरत

न रहे।"**58** यह बात शान्ता को गहराई तक प्रभावित करती है शान्ता मन से किसी को अपनाकर वेश्या की धारणा अपने दिल से निकाल देती है। इस तरह शान्ता के जीवन का आधार बदल जाता है।

'पेरिस रोड' कहानी में कुलवीर एक ऐसी नारी के दुख से व्याकुल है जो अपने ही पति द्वारा उसे देह व्यापार करने के लिए मजबूर करता है। कुलवीर अपनी कॉलोनी में देह व्यापार के व्यवसाय को कॉलोनी के सभी लोगों के साथ बन्द करवा देता है। लेकिन उस नारी का पति धन्धा बन्द होने से उसे मार मारकर उसका शरीर नीला पड जाता है। यह पीड़ा को देखकर कुलवीर को सहन नहीं होता है। कॉलोनी की गन्दगी को साफ करने के लिए कुलवीर को एवज से सम्मानित करने में आता है तो "उसे हारो के फूल कांटो की तरह चुभ रहे थे, जय - जयकार में चीत्कार सुनाई पड़ रहा था। आज फिर सीता की उधडी हुई पीठ उसके सामने आकर खड़ा हो गया था।"**59** यहाँ पर कुलवीर का उस नारी से कोई रिश्ता नहीं है, बस एक मानवता का रिश्ता। क्या नारी को अपने ही धर में बदनाम होना पड़ता है ? यह जटिल नारी पात्रों का अध्ययन करने के बाद कहीं-कहीं उनमें खून के रिश्तों से भी ज्यादा प्रगाढ़ता दिखाई देती है जो कहीं मनुष्य का स्वार्थी स्वभाव भी झलकता है।

*** निष्कर्ष**

अतः इस तरह कहा जा सकता है कि महीप सिंह की कहानियों में अधिकतर महानगर के मध्यम वर्ग की नारी की संम्बधों के बारे में प्राप्त होता है। नारी की जटिलता को व्यक्त करने में महीप सिंह के कथाकार का मन अपेक्षाकृत अधिक रमा है और उन्होंने इस संदर्भ में कई बहुत अच्छी कहानियों लिखी है। महानगर में नारी के यौन संबंध में ज्यादा बताया गया है। उन्होंने लगभग सभी तरह के नारी की भूमिकाएँ की

कहानियों में बताया है। नारी की वास्तविकता को उन्होंने पूरी गहराई से आंखे चुराए बिना मनुष्य की जिजीविषा और उसकी मूलभूत अच्छाई पर उनकी आस्था बनी रही है। किसी भी सम्बन्ध में नारी का पात्र नितान्त नकारात्मक पात्र नहीं लगता है। महानगर और मध्यमवर्ग के नारी पात्र है, जो सामान्यता शिक्षित और जागरूक है। ये अपने अहम के प्रति भी चैतन्य है और सम्बन्धों में भूमिकाएँ निभाने के प्रति भी। इसी कारण नारी नैतिक संकट में घिरे दिखाई देती है। महीप सिंह का कहना है कि - **"**मेरा उद्देश्य नारी पात्रों के माध्यम से उस स्थिति और उसकी सारी विडंबनाओं और विद्रयताओं को उजागर कर देना होता है, जिससे कि हम जान सकें कि जिस माहौल के अन्दर हम जी रहे है वह कितना विसंगत है। विशेष रूप से स्त्री-पुरुष की मेरी कहानियों इन संबंधों के तनाव में झांकने की कोशिश करती है।**"60** इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि इनकी कहानियों के विस्तृत संसार में अधिक स्थान स्त्री पुरुष को मिला है। इनकी कहानियों में नारी, पुरुष को अपने जीवन का पूरक तो मानती है, मगर अपनी अस्मिता की किंमत पर नहीं। वह पुरुष के साथ धोखा खाती है, मगर टूटती नहीं है, वह परिस्थितियों से लड़कर जिन्दगी जीती है। नारी अपने निर्णय स्वंय लेने की स्थिति में है तथा परिणाम को भोगतने की स्थिति के लिए भी तैयार है।

स्वातंत्र्योतर काल में नारी ने अपनी एक नई पहचान बनाई है, वह व्यक्ति, परिवार और समाज के विकास में सहभागी बनी है, तथा उसमें स्वाभिमान के प्रति जागृतता बढ़ी है। वह पुरुष की उपेक्षा उच्छृंखलता या स्वामित्व को सहने की स्थिति में नहीं है तथा शादीशुदा उसके लिए सामान्य बन गया है। इनकी कहानियों के नारी पात्र जीवंत व सक्रिय है। डॉ.कमलेश सचदेव का कहना है कि **"**स्त्री बदली है, बदलने की प्रक्रिया में है और इस बदलती स्त्री को लेकर महीप महीप सिंह की कहानियों का

पुरुष भौंचक्का सा दिखाई देता है। घर से बाहर उसे जो स्त्री मिलती है, उसकी बुद्धिमत्ता और स्मार्टनेस उसे लुभाती है लेकिन उसकी खिलंदडी प्रवृत्ति उसे यातना देती है।"**61** महीप सिंह महानगरीय परिवेश के मानवीय संबंधों के कहानीकार है, इसलिए उन्होंने वहाँ के परिवेश में जीती हुई नारी के जीवन में बढते तनाव, बिखराव, आत्मकेंद्रित होते नारी के रूप को उजागर किया है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

(1) डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा - संसार - पृ - 70

(2) डॉ.हेतु भारद्वाज, स्वातंत्र्योतर हिन्दी कहानी में मानव प्रतिमा - पृ - 16

(3) डॉ.महीप सिंह, इक्यावन कहानियाँ - पृ. भूमिका - 01

(4) डॉ.सुरेशचंद्र गुप्ता, लघुकथा: संरचना और शिल्प - पृ - 33

(5) महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कडियां - पृ - 136

(6) जया आदवानी - पृ - 76

(7) डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा - संसार - पृ - 82

(8) वहीं - पृ - 82

(9) वहीं - पृ - 83

(10) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'काला बाप गोरा बाप' - पृ - 215

(11) डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा-संसार - पृ - 83

(12) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'उलझन' - पृ - 26

(13) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'पत्नियाँ' - पृ - 63

(14) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'लोग' - पृ - 131

(15) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'घिरे हुए क्षण' - पृ - 138

(16) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'गंध' - पृ - 166

(17) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'कटाव'- पृ - 250

(18) डॉ.महीप सिंह, संबंधो का सन्नाटा, 'ऐसा ही है' - पृ - 227

(19) डॉ.महीप सिंह, संबंधो का सन्नाटा, 'पति' - पृ - 247

(20) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'लोग' - पृ - 132

(21) वहीं - पृ - 132

(22) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'शोर' - पृ - 235

(23) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'बाद की बात' - पृ - 229

(24) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'सीधी रेखाओ का वृत' - पृ - 213

(25) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'गंध' - पृ - 167

(26) डॉ.महीप सिंह, संबंधो का सन्नाटा, 'माँ' - पृ - 276

(27) वहीं - पृ - 276

(28) उद्धृत हरिदत वेदालंकार, हिन्दू परिवार मीमांसा - पृ - 03

(29) कमलेश्वर, नई कहानी की भूमिका - पृ - 133

(30) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'शोर' - पृ - 235

(31) वहीं - पृ - 236

(32) वहीं - पृ - 236

(33) डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा - संसार - पृ - 80

(34) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'बाद की बात' - पृ - 227

(35) डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा-संसार - पृ - 81

(36) वहीं - पृ - 81

(37) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'गंध' - पृ - 168

(38) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'कुछ और कितना' - पृ - 217-218

(39) वहीं - पृ - 219

(40) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'मैडम' - पृ - 19

(41) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'झूठ' - पृ - 34

(42) डॉ.सुनंतकौर, समकालीन हिन्दी कहानी - स्त्री पुरुष संबंध - पृ - 110

(43) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'विपर्यय' - पृ - 256

(44) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'परवरिश के लिए' - पृ - 42

(45) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'ब्लाटिंग पेपर' - पृ - 49

(46) वहीं - पृ - 50

(47) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'गंध' - पृ - 166

(48) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'घिरे हुए क्षण' - पृ - 138

(49) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'घिराव' - पृ - 176

(50) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'उजाले का उल्लू' - पृ - 65

(51) डॉ.महीप सिंह, क्षणों का संकट, 'कील' - पृ - 141

(52) डॉ.कमलेश सचदेव, महीप सिंह का कथा - संसार - पृ - 84

(53) वहीं - पृ - 85

(54) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'एक्स्ट्रा' - पृ - 54

(55) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'एक स्त्री एक पुरुष' - पृ - 88

(56) वहीं - पृ - 88

(57) वहीं - पृ - 89

(58) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'शास्त्री जी' - पृ - 107

(59) डॉ.महीप सिंह, सुबह की महक, 'पेरिस रोड' - पृ - 146

(60) डॉ.सुरेन्द्र तिवारी, महानगर से रची-बसी, संपादक डॉ.गुरूचरण सिंह कथाकार महीप सिंह - पृ - 77

(61) डॉ.कमलेश सचदेव, एक साथॅक कथाकार महीप सिंह, गगनाजवल 2001- पृ - 62